बौद्ध धर्म दर्शन एवं शिक्षा

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

बौद्ध धर्म दर्शन एवं शिक्षा

महात्मा बुद्ध की शिक्षा तत्कालिक समय से लेकर आज तक प्रासंगिक बनी हुई है| इसे दार्शनिक एवं सामाजिक शिक्षा, दर्शन के रूप में समझा जा सकता है.

बौद्ध धर्म की दार्शनिक शिक्षा

बुद्ध का मानना था की जीवन में दुःख का कारण इच्छाएँ है लेकिन इन्हें ज्ञान द्वारा समाप्त किया जा सकता है| यह अच्छे कर्म (अष्टांगिक मार्ग) द्वारा संभव है|

उन्होंने क्षणिकवाद का सन्देश दिया| उनका कहना था की सबकुछ क्षणिक है (सुख भी दुःख भी) कुछ भी स्थायी नहीं है| उन्होंने इश्वर की सत्ता एवं आत्मा की अमरता का खंडन किया.

उन्होंने प्रकृति / जगत को ईश्वरीय कारण से नहीं जोड़ा| उनका कहना था की विश्व प्राकृतिक नियमों से चल रहा है|

सामाजिक शिक्षा

- अलौकिक शक्तियों के बजाय विवेक एवं तर्क पर बल देना
- अहिंसा का पालन करना चाहिए तथा मृदुभाषा का उपयोग करना चाहिए
- बुद्ध का कहना था की समाज का निर्माण लोगों ने किया है इश्वर ने नहीं| अतः व्यक्तिगत प्रयास से बदला जा सकता है. फलतः उन्होंने दासों तथा नौकरों से अच्छा व्यवहार करने के लिए कहा.

- बुद्ध ने आत्मदीपोभव का सन्देश दिया. अर्थात अपनी मुक्ति का मार्ग स्वयं तलाशो.

बौद्ध धर्म दर्शन

बौद्ध धर्म दर्शन के अंतर्गत तीन चीजे प्रमुख है: बौद्ध धर्म के त्रिरत्न, बौद्ध धर्म दर्शन के चार आर्य सत्य, बौद्ध तत्व मीमांसा विचार.

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न

बौद्ध धर्म के त्रिरत्न है - बुद्ध, धम्म एवं संघ.